International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 16-03-2022, Accepted: 03-04-2022, Published: 18-04-2022
Volume 8, Issue 2, 2022, Page No. 116-119

भारतीय समाजवाद के पितामहः आचार्य नरेन्द्रदेव

Nisha Kanwar
Department of Political Science, Rajasthan University, Jaipur, Rajasthan, India

सारांश
भारतीय समाज में नए युग की चेतना व आदर्श को परिचित कराने में आचार्य नरेन्द्र देव ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनका आधार राष्ट्रीयता, जनतंत्र व समाजवादी था। वे नैतिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विकास में आस्था रखते थे। वह आम जनता के सामान्य हित के लिए सामाजिक पुनर्गठन का समर्थन करते थे। आचार्य जी का समाजवाद पूर्णरूपेण एक नैतिक और आध्यात्मिक विशेषता लिए हुए है। वह वर्ग संघर्ष को समाजवादी दर्शन का अभिन्न अंग मानते थे। समाजवाद जहाँ शोषण से मुक्ति का आह्वान करता है, वहीं मज़दूरों से यह भी अपेक्षा करता है कि नैतिक विकास हो, यही समाजवाद की सांस्कृतिक भूमिका है। आचार्य ने समाजवाद को नए युग के शुभ सन्देश के रूप में स्वीकार किया। वह इस परमाणु युग में हिंसा को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही स्तर पर समाजवादी अस्वीकार करते हैं। साथ ही वे कृषि प्रधान देश की जनता की समस्याओं का अध्ययन करते हैं। उन्होंने किसानों को समाजवादी समाज की संरचना में समान भागीदार बनने के लिए सहकारिता पर ज़ोर दिया। उन्होंने ग्राम विकास के लिए साक्षरता अभियान का समर्थन किया ताकि किसानों का विशाल जनसमुदाय समाजवादी विचारधारा से अनुप्राणित हो।

मूल शब्दः समाजवाद, मार्क्सवाद, वर्गहीन समाज, गांधीवाद, सत्याग्रह, वर्ग संघर्ष, पूँजीवाद, राष्ट्रवाद, साम्राज्यवाद

प्रस्तावना
समाजवादी चिंतन की पृष्ठभूमि में आचार्य नरेंद्र देव का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। समाजवाद का मौलिक उद्देश्य है– समानता की स्थापना करना। समाजवाद ने सभी के आर्थिक संकट, बेरोजगारी तथा दुखो को समाप्त कर दिया है और प्रत्येक से उसकी योग्यता के अनुसार, प्रत्येक को उसके कार्य के अनुसार के सिद्धांत को लागू करता है। आचार्य नरेंद्र देव ने भारतीय समाज को एक समाजवाद के रूप में नैतिक स्तर पर नवीन दृष्टि प्रदान की है। आचार्य नरेंद्रदेव भारत की महान विभूतियों में से एक है। वह युगपुरुष थे क्योंकि उन्होंने अपने पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हुए भारत के लोगों में अपनी आकांक्षाओं को प्रतिबंधित किया। उनका व्यक्तित्व समाज में समरस था। नरेंद्रदेव को राजनीति भारतीय संस्कृति तथा इतिहास के क्षेत्र में जो नेतृत्व व अपूर्ण कल्पना शक्ति प्राप्त थी उससे देश पूर्ण परिचित हैं। इतिहास व संस्कृति के अध्ययन ने ही उन्हें बोद्ध धर्म व दर्शन की ओर आकर्षित किया। यह भी सत्य है कि उनके
जीवन का परवर्ती 20–22 वर्ष समाजवाद और मार्क्स के जीवन दर्शन से अत्यधिक प्रभावित हुआ किंन्तु इतने से ही उनके जीवन दर्शन की व्याख्या नहीं की जा सकती है। 1933–34 के समय वह पाश्चात्य दर्शन से भी परिचित हो चूके थे किंतु जीवन संबंध दर्शन की जिज्ञासा उनमें उत्तरोत्तर प्रबल होती जा रही थी। नरेंद्र देव भारत के उन समाजवादियों में से थे जिन्होंने समाजवाद की एक रूपरेखा निर्मित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे अपने समाजवादी विचारों का निर्माण राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान करते हैं। उनके समाजवादी चिंतन और व्यक्तित्व के विकास में दो महत्वपूर्ण तत्व थे– एक महात्मा बुद्ध का उदाहरण दूसरा, काल मार्क्स के विचार। बुद्ध व मार्क्स दोनों ही सामाजिक क्रांति के प्रवर्तक थे। नरेंद्र देव ने इन दोनों के विचारों के तत्वों को ग्रहण किया था।
नरेंद्र देव के सामाजिक समाजवादी विचारों पर गाँधीजी का व्यक्तित्व मार्क्सवादी–लेनिनवादी विचारधारा का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। उनका कहना था कि "हमारे सामने जो काम है उसे हम तभी कर सकते हैं जब हम समाजवाद की सिद्धांतों और उद्देश्यों का हृदयगमन कर लें तथा परिस्थितियों के सही ज्ञान के लिए मार्क्स द्वारा प्रतिपादित द्वंद्वात्मक पद्धति को समझें और उसे अपने कार्यकलाप का आधार बनाने का प्रयत्न करें। हमें वैज्ञानिक समाजवाद का आश्रय लेना चाहिए तथा यूरोपियन समाजवाद से बचने का प्रयत्न करना चाहिए"। नरेंद्रदेव के समाजवादी नेतृत्व के कारण ही कांग्रेस की नीतियों में परिवर्तन आया और देश के किसान भारतीय किसान सभा, देसी रियासतों के लोग व प्रजा परिषद जैसे संगठनों के माध्यम से नरेंद्र देव के नेतृत्व में कांग्रेस में सम्मिलित हुए। सन् 1934 में "कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी" की स्थापना सम्मेलन में अध्यक्ष के रूप में दिया गया उनका भाषण आज भी वैज्ञानिक समाजवाद का प्रमाणिक दस्तावेज माना जाता है।
नरेंद्र देव के मतानुसार समाजवाद राजनीतिक प्रणाली नहीं है। वे समाजवाद को जीवन दर्शन मानते हैं। उनके लिए समाजवाद नवसांस्कृतिक आंदोलन है जिसका केंद्रबिंदु मानव हैं। उनके समाजवादी चिंतन की रीढ़ मनुष्य व मनुष्यता है। समाजवादी व्यवस्था के लिए वह समाजवादी समाज को आवश्यक मानते हैं। आचार्य जी ने समाजवादी क्रांति को संहार नहीं निर्माण के रूप में और समाजवाद को एक विश्वव्यापी आंदोलन के रूप में देखा। उन्होंने एशिया व भारत में राष्ट्र की शक्ति और उनके चरित्र को पहचाना। वे जीवनपर्यंत मानव विकास की नई मंजिल पर नव–संस्कृति में नव–समाज की रचना का स्वप्न साकार करने में लगे रहे। इतने बड़े काम के लिए उन में अपेक्षित बौद्धिक प्रतिभा और चरित्र बल दोनों थे। वे वर्गहीन समाज की स्थापना के लिए वर्ग संघर्ष की अनिवार्यता को स्पष्ट रूप से स्वीकार करते थे। वे जिस

नैतिकता को मानते थे उसमें अपने विरोधी के प्रति नैतिक होने की अनिवार्य प्रतिबद्धता थी। भारतीय समाज में आचार्य नरेंद्रदेव जैसे व्यक्तित्व का होना अपने आप में एक गौरव की बात है। उनके कार्य सदा सराहनीय रहेंगे। हम सभी जानते हैं कि समाजवादी विचारधारा को भारतीय समाजवादी विचारधारा के रूप में नरेंद्र देव की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अतः इन्हें "भारतीय समाजवाद का जनक" माना जाता है। इन्होंने मार्क्सवाद–लेनिनवाद का गहरा अध्ययन किया किंतु समाजवादी विचार की व्याख्या भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक व आर्थिक पृष्ठभूमि में की थी तथा भारतीय समाजवाद की एक नई शाखा को जोड़ा।

विद्यार्थी जीवन से ही नरेंद्रदेव कांग्रेस के सक्रिय सदस्य के रूप में स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी थे। किंतु 1906 के बाद उनका झुकाव कांग्रेस उग्रवादी दल की ओर हो गया। वह 1934 तक कांग्रेस के साथ रहे। जयप्रकाश नारायण ने 1934 में "समाजवादी दल" को स्थापित किया। जिसके प्रथम सभापति नरेंद्र देव थे। कांग्रेस में इस समय यह प्रश्न उठा कि अन्य दल के सदस्यों कांग्रेस ने अलग कर दिया जाए किंतु गाँधी का मत था कि स्वाधीनता संग्राम में सभी दलों का सहयोग आवश्यक है। इसलिए वह भी 1948 तक समाजवादी दल के सदस्य के रूप में कांग्रेस में ही बने रहे। नरेंद्रदेव पर महात्मा गाँधी की नैतिकतावादी सिद्धांतों का गहरा प्रभाव पड़ा। उनकी मान्यता थी कि भारतीय समाज का पुनरुद्धार केवल लोकतांत्रिक समाजवाद के द्वारा ही संभव है। जिसके द्वारा भारत में सामाजिक व आर्थिक समानता स्थापित की जा सकती है। उनके विचार मे भारत की तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों व उनकी समस्याओं के हल तीन प्रमुख सैद्धांतिक आदर्श थे–राष्ट्रीयता, लोकतंत्र तथा समाजवाद।

गांधीजी के समान ही वह भारतीय ग्रामीण जीवन की समस्याओं का विश्लेषण करते हैं। उनका चिंतन ग्रामों के शोषित लोगों के जीवन पर केंद्रित है। नरेंद्र देव कहते हैं– "सामाजिक और आर्थिक विषमता को दूर कर उन्नति लिए सभी को ऊंचा उठाकर, जाति और संप्रदाय के बंधनों को तोड़कर ही हम अहिंसा की सच्चे अर्थों में प्रतिष्ठा कर सकते हैं। यदि किसी ने ऐसी शिक्षा दी तो यह गांधी जी ने दी। नरेंद्र देव की किसान आंदोलन में गहरी रुचि थी। अखिल भारतीय किसान सभा के संस्थापकों में उनका प्रमुख योगदान था। वे कहते हैं, यदि सत्याग्रह को शक्तिशाली बनाना है तो किसान और मज़दूरों को साम्राज्यविरोधी संघर्षों के के साथ जोड़ना होगा। इसके लिए किसान सभा और मजदूर सभा का कार्य बड़े पैमाने पर होगा। समाजवादियों की दृष्टि से यह पूँजीवादी प्रजा–सत्तात्मक क्रांति की मंजिल है। इसका एक स्तंभ विदेशी सत्ता का विरोधी है तथा दूसरा किसानों की क्रांति का। जब पहले स्तंभ दुर्बल पड़े तो दूसरे को मजबूत करने का प्रयास करना चाहिए।सत्याग्रह और नैतिकता के मूल्यों को राष्ट्रीय आंदोलन की दिशा निर्देशन के साथ जोड़कर वे गांधीवादी साधनों का ही समर्थन करते हैं। वह स्वीकार करते हैं– गांधीजी का जीवन अहिंसा का उपदेश है।

भारतीय संदर्भ का उन्होंने मार्क्सवाद की उन अवधारणा के आधार पर जिन्हें वे युक्तिसंगत मानते थे विश्लेषण प्रस्तुत किया। नरेन्द्रदेव सामाजिक क्रांति के समर्थक हैं तथा वह समाजवाद की स्थापना के लिए वर्ग संघर्ष को अनिवार्य मानते हैं। मार्क्सवाद के सिद्धांतानुसार उन्होंने मानवीय समाज तथा भारतीय समाज के विकास का विश्लेषण प्रस्तुत किया। आदिम अवस्था से लेकर समाजवाद की स्थापना तक विकास प्रक्रिया का विश्लेषण किया। वे वर्ग संघर्ष तथा उत्पाद की शक्तियों के विकास के विचारों के आधार पर करते हैं। वे मार्क्स के इस विचार को स्वीकार करते हैं कि समाज के आर्थिक ढांचे में परिवर्तन आने से समाज व्यवस्था के साथ ही मानसिक विचारधारा में भी परिवर्तन आते हैं। उनकी मान्यता है कि मार्क्सवाद की इस धारणा को स्वीकार कर हम भारतीय समाज के भूतकाल वर्तमान को सही ढंग से समझ सकते हैं तथा उस आधार पर भविष्य के समाज की रूपरेखा निश्चित कर सकते हैं। नरेन्द्रदेव पूँजीवाद को शोषणकारी व्यवस्था मानते हैं क्योंकि इस व्यवस्था में मजदूर के श्रम का शोषण पूंजीपतियों द्वारा किया जाता है। जिनके हाथों में अंततः संपत्ति का केंद्रीकरण होता है। पूँजीवाद की इन बुराइयों का अंत केवल सर्वहारा वर्ग के संगठित प्रयास से ही संभव है।

नरेंद्र देव मार्क्सवाद–लेनिनवाद के द्वंद्ववाद जैसे सिद्धांतों को स्वीकार अवश्य करते हैं किंतु मार्क्सवाद का वे उसके समग्र रूप में विश्वास नहीं करते हैं। यह उनके चिंतन की विशेषता है। वे स्वीकार करते हैं कि "वास्तविक जटिल होता है जिसे सामान्य फॉर्मूले द्वारा समझा नहीं जा सकता हैं"। भारतीय संदर्भ में उनका कथन है कि "हमें वैज्ञानिक समाजवाद का आश्रय लेना चाहिए और यूरोपीय समाजवाद अथवा सामाजिक सुधारवाद से बचने का प्रयत्न करना चाहिए"।

मार्क्सवादी जहाँ मानते हैं कि पूँजीवादी व्यवस्था में समाज केवल दो परस्पर विरोधी वर्गों पूंजीपतियों व सर्वहारा वर्ग में बंट जाता है। वही नरेंद्रदेव की धारणा है कि समाज में इन दो ध्रुवों के बीच अन्य वर्ग भी पनपते हैं। उनके विचारानुसार मध्यम वर्ग, संक्रमण वर्ग तथा मिश्रित वर्ग इसी प्रकार के अन्य वर्ग है। मार्क्सवादी चिंतन में कृषकों की अपेक्षा की गई है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि उनमें वर्ग चेतना का अभाव है। ऐन्जल्स तो कृषकों को "सभ्यता के बर्बर लोग" मानते हैं। वहीं नरेंद्रदेव कृषकों को समाजवादी क्रांति का अभिन्न अंग मानते हैं। उनकी मान्यता है कि कृषकों के विशाल समुदाय को समाजवादी विचारधारा से अनुप्राणित कर उन्हें सामाजिक क्रांति का अंग बनाना होगा। इसी दृष्टि से उन्होंने देशभर में किसान सभाओं को संगठित भी किया और उनके उत्थान के अनेक उपाय बताएं। उनका मत था कि भारतीय किसानों में साक्षरता का प्रसार किया जाए, उनकी सहकारी समितियां गठित की जाए, उन्हें कम ब्याज पर ऋण दिया जाए, उन पर जितना ऋण का पुराना बोझ है उसे निरस्त कर दिया जाए। उनका विचार था कि ऐसी भूमि व्यवस्था में सुधार किया जाए जिससे व्यवस्था में बिचौलियों का कोई स्थान न हो ।उन्होंने जमींदारी प्रथा को तत्काल समाप्त करने पर बल दिया। वे कहते हैं कि बिना जमींदारी प्रथा का अंत हुए उद्योग धंधे की प्रगति नहीं हो सकती है। खेती की उन्नति की लिए जमींदारी प्रथा का अंत होना और खेती पर से दूसरे उन सभी बिचौलियों को हटाना जो खेती न करते हुए भी उनकी पैदावार के अंश को हड़प लेते हैं, बहुत आवश्यक है। नरेंद्र देव कृषि के साथ ही भारत में मज़दूरों की शक्ति को संगठित करने पर भी बल देते हैं।उनका विचार है कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन किसानों मज़दूरों के संगठन व सहयोग के बिना सफल नहीं हो सकता है। अतः आर्थिक दृष्टि से सुधार प्रदान कर इन्हें स्वतंत्रता आंदोलन में सम्मिलित किया जाए। उनका विचार था कि हम चाहते हैं कि सत्ता राष्ट्र की जनता के हाथ में आए अर्थात किसान और मज़दूर, जो राष्ट्र की संपत्ति का उत्पादन करते हैं, राज्य शक्ति का संचालन कर उपयोग करें।

भारत के गांवों के उत्थान के लिए वे जमींदार प्रथा का अंत आवश्यक मानते थे। उनका मत है कि जमींदारों ने ग्रामीण किसानों का शोषण किया है। अतः जमींदारी प्रथा के अंत के बाद ज़मीदारों को किसी प्रकार की क्षति पूर्ति न दी जाए।

इस कदम के बाद सरकार व किसानों के पारस्परिक सहयोग से गांवों में उद्योग धंधा को बढ़ावा दिया जाए। जिससे भूमि पर से अनावश्यक बोझ खत्म हो जाए। वे ग्रामीण स्तर पर सामूहिक खेती का भी समर्थन करते हैं। वे किसानों को उचित ब्याज पर ऋण दिलाने की बात करते हैं। खाद, पानी, बीज की समुचित व्यवस्था की उनके सामुदायिक जीवन को उन्नत करने की दृष्टि से वे ग्राम सभा का तथा पंचायतों का सशक्तिकरण आवश्यक मानते हैं। वहाँ ग्रामीणों को वयस्क मताधिकार दिया जाए जिससे उनमें राजनीतिक जागृति आएगी। अपने अधिकारों से परिचित होकर वे शोषणकर्ताओं के विरुद्ध संघर्ष कर सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त कर सकेंगे। उनकी मान्यता है कि सामाजिक स्वतंत्रता के लिए राजनीतिक जागरूकता और लड़ाई आवश्यक है। वे मानते हैं कि ऐसी लड़ाई में ग्रामों से ऊंच–नीच संबंधित वर्गों का अंत होगा। उनके अनुसार समाजवादियों को इस संघर्ष को सही रूप देना है। कुचला हुआ मजदूर आर्थिक एकाधिकार का दोष जाति की ऊँचाई को देता है। वह यह नहीं देख पाता है कि शोषक और शोषित ऊंची तथा नीचे दोनों जातियों में बंटे हुए हैं। नरेंद्रदेव इस प्रकार ग्रामीण स्तर पर वर्ग भेद मिटाने की योजना प्रस्तुत करते हैं।

नरेंद्र देव भारत के कृषक पुनर्निर्माण में विश्वास करते थे। वे इस पक्ष में थे कि किसानों के आर्थिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए किसान सभाओं को संगठित किया जाए। उनका आग्रह था कि सभी प्रकार के किसानों की शक्तियां को एकजुट किया जाए। नरेन्द्रदेव स्टालिन की इस बात से पूर्णतः सहमत थे कि किसानों के विशाल समुदाय को समाजवादी विचारधारा से अनुप्रमाणित करना आवश्यक है। बहुसंख्यक किसानों को देश के समाजवादी पुनर्निर्माण की योजना से संबद्ध करने के लिए सहकारी समितियों का संगठित करना और उन्हें सुदृढ़ बनाना अति आवश्यक है। परन्तु नरेंद्र देव ने किसानों के वर्गगत दृष्टिकोण से संबंधित किसान वाद की आलोचना की। उनका मानना था की किसान वाद से कहीं देहात तथा नगरों के बीच हानिकारक संघर्ष न उत्पन्न हो जाए। नरेंद्रदेव इस पक्ष में थे कि गांव में सहकारी व्यवस्था कायम करके लोकतांत्रिक ग्राम सरकार की स्थापना की जाए। जनता के पिछड़ेपन को दूर करने तथा उसे नवीन आदर्शों और आकांक्षाओं से अनुप्रमाणित करने के लिए नरेंद्रदेव ने इस बात का समर्थन किया कि भारत के गांवों में किसी न किसी रूप में नवीन जीवन आंदोलन प्रारंभ किया जाए।

स्वाधीनता तथा राष्ट्रवाद के पुजारी आचार्य नरेंद्रदेव साम्राज्यवाद के आलोचक हैं। साम्राज्यवाद को वे पूँजीवाद की चरम सीमा मानते हैं और शोषण की जो दुर्गुण राष्ट्रीय स्तर पर पाए जाते हैं। नरेंद्रदेव साम्राज्यवाद को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उपनिवेशी राज्यों के शोषण की व्यवस्था मानते हैं। उनका कथन है कि "ब्रिटिश शासकों ने भारत को आर्थिक व राजनीतिक शोषण का शिकार बनाया। उसे कृषिप्रधान ही बनाए रखा। जिससे कि यहाँ के कच्चे माल का निर्यात कर इंग्लैंड ले जाया जाए और वहाँ से तैयार किए गए माल को वे ऊंची कीमतों में बेचे। वे यह भी मानते हैं कि "साम्राज्यवाद एक विश्वव्यापी शोषणकारी व्यवस्था है जिसमें समाज के पिछड़े देशों को अपने प्रभाव क्षेत्रों में बांट रखा है"। दक्षिण एशिया के तथा मध्यपूर्ण की प्रायः सभी देशों का साम्राज्यवादियों द्वारा शोषण किया जा रहा है। अतः एशिया में फैले साम्राज्यवादी जाल को वे "यूरोपीय साम्राज्यवाद का बोलबाला" कहते है। उनका मत है कि यद्यपि उपनिवेशवाद साम्राज्यवाद एक अभिशाप है किंतु इसकी शोषणकारी प्रवृत्ति ने एशिया अफ्रीका के देशों में उसके विरुद्ध राष्ट्रवाद की भावनाओं को जन्म दिया है। उनका मत है कि जिन विविध कारणों से भारत तथा एशिया के अन्य देशों में साम्राज्यवाद ने अपने पैर पसारे है, उसके विरोध में इन देशों में राष्ट्रीयता ने जन्म लिया है और अब राष्ट्रीय जागरण की अवस्था पैदा हो चुकी है, जिससे साम्राज्यवाद के पैर इन देशों में उखड़ रहे हैं। वे कहते हैं नवीन एशिया में साम्राज्यवाद और अधिनायकवाद का स्थान नहीं है। साम्राज्यवाद के साथ संघर्षों से भारत में जिस राष्ट्रीयता का जन्म हुआ है नरेंद्रदेव उस राष्ट्रवाद की समर्थक है। किंतु उनकी राष्ट्रीयता की धारणा संकुचित नहीं है। साम्राज्यवाद और उसके अंतर्निहित शोषण के विरुद्ध राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्षों के लिए वे राष्ट्रीयता के सकारात्मक महत्व को स्वीकार करते हैं। इससे भी आगे बढ़ते हुए वह राष्ट्रीयता को समाजवाद के साथ जोड़ते हैं। उनकी राष्ट्रीयता की धारणा केवल भारत तक ही सीमित नहीं अपितु एशिया के संदर्भों से भी जुड़ी हुई है। वे चाहते हैं कि एशिया के स्वाधीनता आंदोलन एकजुट हो।

आचार्य नरेंद्रदेव के इन विचारों से यह कहा जा सकता है कि भारत में समाजवादी विचारधारा के अग्रज थे। उन्होंने स्वतंत्रता संघर्ष का लोकतंत्र के आदर्शों को समाजवादी विचारों के साथ जोड़ा। यही कारण है कि उन्हें "भारत में प्रजातांत्रिक समाजवाद का व्याख्याता" माना जाता है। प्रजा सोशलिस्ट पार्टी 1955 के अधिवेशन में प्रस्तुत किए गए समाजवादी कार्यक्रम से स्पष्ट हो जाता है कि उनके समाजवादी विचारधारा में क्या योगदान रहे हैं। उनका विचार है कि– हमारा समाजवाद लोकतांत्रिक है क्योंकि यह श्रेणीबद्ध सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध है। यह अधिनायकवादी सामंतवादी पूँजीवादी तथा अन्य किसी भी रूप में सामाजिक राजनीतिक व आर्थिक शक्ति के एकाधिकार के विरुद्ध है। यह हर तरह के साम्राज्यवाद व विदेशी हुकूमत के एकाधिकार को नहीं मानता है। यह सामाजिक संबंधों वह व्यवहार की लोकतांत्रिक स्वरूप का समर्थक है। यह सर्वत्र सामाजिक आर्थिक व राजनीतिक साधनों पर श्रमिक के नियंत्रण की व्यवस्था का समर्थन करता है।यह सभी सामाजिक आर्थिक व राजनीतिक मामलों में स्वराज की व्यवस्था प्रस्तुत करता है। यह संपूर्ण सत्ता व उत्तरदायित्व के लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण पर बल देता है। यह सामाजिक सुख को बढ़ावा देते हैं तथा जनता को सत्ता का आधार स्रोत मानता है तथा जनता के प्रतिरोध का अधिकार प्रदान करता है।साथ ही यह विश्व शांति व अंतरराष्ट्रीय संबंधों के लोकतांत्रिक संगठन का समर्थन भी करता है।

आज दुनिया निश्चित रूप से विनाश के कगार पर खड़ी है। जिससे उसकी रक्षा करना कठिन दिखाई दे रहा है। सतत वैचारिक –संघर्ष, जातिय विविधता इसके प्रमुख कारणों में से एक है। जिसके परिणामस्वरूप भयानक युद्ध छिड़ सकते हैं। ऐसी दशा में मानव जाति को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए नैतिकता को चुनना आवश्यक है। आचार्य नरेंद्रदेव हमें उसी दिशा में जाने का संकेत करते हैं। वे नैतिकता व मानवता के प्रतिमूर्ति हैं। जिनके के सिद्धांतों को अपनाकर हम एक स्वच्छ राजनीतिक वातावरण निर्मित कर सकते हैं। बौद्ध दर्शन का प्रकांड विद्वान, भारतीय संस्कृति का रक्षक, स्वतंत्रता सेनानी और समाजवादी आंदोलन के नेतृत्व में अग्रणी तपस्वी नरेंद्रदेव भले ही 9 फरवरी 1956 में इस संसार से चले गए परंतु उनके निधन के बाद भी समाजवादी दल चलते रहे हैं। अंत में हम यह कह सकते हैं कि आचार्य नरेंद्र देव ने जिस प्रकार भारतीय समाजवाद के दर्शन को स्थापित करके वर्ग विहीन समाज की स्थापना करना चाहा जिसमें न कोई शोषक होगा और न कोई शोषित, यह अद्भुत था। वे हमेशा ही मार्क्सवाद– लेनिनवाद व गांधीवाद का गहरा अध्ययन करके देश

की परिस्थितियों के अनुरूप एक भारतीय समाजवादी चिंतन प्राप्त करना चाहते थे तथा इस दृष्टि से उनके विचार मौलिक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कमल, डॉ. के.एल.: समाजवादी चिंतनः प्रकाशक रिसर्च पब्लिकेशन त्रिपोलिया, जयपुरः वितरक विश्व भारती पब्लिकेशन, नई दिल्लीः 2008
2. शंकर, डॉ. शोभाः आधुनिक भारतीय समाजवादी चिंतनः प्रकाशित साहित्य भवन प्रा. लि. 93, के.पी. कक्कड़ रोड, इलाहाबादः 1980
3. दीक्षित, जगदीश चंद्रः आचार्य नरेंद्रदेवः प्रकाशक अशोक प्रियदर्शी निदेशक, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उत्तर प्रदेशः 1989
4. भसीन, प्रेमः लिमगे, मधुः सिंह, विनोद प्रसादः शर्मा, हरिदेवः आचार्य नरेंद्रदेव जन्मशति ग्रंथः अयडिएंट पब्लिशर्स ई – 188 कालका जी, नई दिल्लीः 1990
5. शर्मा, योगेंद्र कुमारः भारतीय राजनीतिक विचारकः भाग–2: कनिष्का पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्लीः 2001
6. सिंह, भगवती शरणः आचार्य नरेंद्रदेवः प्रकाशन सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकारः स्वतंत्र भारत प्रेस, एस्प्लेनेड रोड, नई दिल्लीः 1991
7. अवस्थी, डॉ. ए.: अवस्थी, डॉ. आर.के.: आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतनः रिसर्च पब्लिकेशन त्रिपोलिया, जयपुरः 2007
8. मोहन, सुरेंद्रः आचार्य नरेंद्र देव और उनका युगः प्रकाशक आचार्य नरेंद्रदेव समाजवादी संस्थान, वाराणसीः जून 1989
9. शंकर, गिरिजाः भारत में लोकतांत्रिक समाजवादी आंदोलन (भाग–1): विश्व भारती पब्लिकेशन,नई दिल्लीः 2004
10. सिंह, अयोध्याः समाजवाद भारतीय जनता का संघर्षः अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि. 4697/3, 21 ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्लीः 2007
11. देव, आचार्य नरेंद्रः राष्ट्रीयता और समाजवादः ज्ञानमण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली
12. अप्पादोराय, ए.: इंडियन पॉलिटिकल थिंकिंग इंदर ट्वेंटीथ सेंचुरी, कलकत्ताः 1971